नवदुनियाँ, भोपाल

22 MAR 2017

सन्दर्भ : विश्व जल दिवस

जल संसाधनों का किफायती उपयोग करना सीखना होगा

शिवराज सिंह चौहान

विश्व जल दिवस 22 मार्च को पूरे विश्व में मनाया जाएगा। इस अवसर पर मध्यप्रदेश में नर्मदा नदी के संरक्षण के विश्व के सबसे बड़े अभियान के बारे में बात करना प्रासंगिक है। भारतीय संस्कृति में जल को बहुत अधिक महत्व दिया गया है और इसे विश्व को हमसे सीखने की जरूरत है। हिन्दू संस्कृति में हम विश्वास करते हैं कि हमारा पूरा जीवन जन्म से मृत्यु तक जल पर आधारित है। हम सभी उत्सवों और धार्मिक क्रिया-कलापों में जल का उपयोग करते हैं।

जल हमारी जीवन-रेखा है और हमारे अस्तित्व का मुख्य आधार है। विश्व की लगभग सभी सभ्यताएं नदियों के किनारे विकसित और पल्लवित हुई हैं। मध्यप्रदेश का सौभाग्य है कि उसे पांच बड़े नदी कछारों का आशीर्वाद मिला है। प्रदेश में 3900 किमी से ज्यादा क्षेत्र में नदियों का बहाव है। ऐसे में हमारी जिम्मेदारी है कि हम इस आशीर्वाद को हमेशा अपने साथ बनाए रखें।

जल एक तेजी से घटते हुए संसाधन में बदल रहा है। भारत में प्रति व्यक्ति जल उपलब्धता 3000 क्यूबिक लीटर से घटकर 1123 क्यूबिक लीटर रह गई है। दूसरी ओर प्रति व्यक्ति जल उपलब्धता का वैश्विक औसत 6000 क्यूबिक लीटर है। भारत में घटती प्रति व्यक्ति जल उपलब्धता आज हमारे लिए चिन्ता का विषय है। बढ़ती हुई जनसंख्या के अलावा पानी का बड़ी मात्रा में दुरुपयोग इसका मुख्य कारण है। हमारे जल संसाधनों का किफायती उपयोग करना सीखना होगा। भावी पीढ़ियों के लिए हमारी नदियों को संरक्षित रखने की महत्ता को समझते हुए ही सरकार ने नर्मदा सेवा यात्रा शुरू की है।

नर्मदा सेवा यात्रा का उद्देश्य प्रदेश की इस सबसे बड़ी नदी के संरक्षण के प्रति जागरुकता उत्पन्न करना है। आज मुझे प्रसन्नता है कि यह यात्रा एक बड़ा जन आंदोलन बन गई है। मां नर्मदा और उसके परिस्थितिकीय तंत्र को संरक्षित और संवर्धित करने का संकल्प लेने के लिए लोग आगे आ रहे हैं। यात्रा ने पूरे विश्व में करोड़ों लोगों के दिल में जगह बनाई है। मां नर्मदा को बचाने के इस अभियान में जाति, रंग, वर्ग के भेदभाव के बिना समाज के सभी क्षेत्रों के लोग पूरे मनोयोग से शामिल हो रहे हैं। नर्मदा तटों पर आगामी 2 जुलाई को 10 करोड़ पौधे लगाने की तैयारी की है।

विश्व जल दिवस की थीम अपशिष्ट जल है। यह संयोग है कि नर्मदा सेवा यात्रा भी अपशिष्ट जल को कम करने और उसे स्वच्छ कर पुन: उपयोग में लेने का अभियान है। पूरे विश्व में 80 प्रतिशत से अधिक अपशिष्ट जल बिना स्वच्छ हुए बहकर पारिस्थितिकीय तंत्र को प्रभावित कर रहा है, जो पर्यावरण के लिए बहुत नुकसानदायक है। आईए विश्व जल दिवस पर हम सब सुखद भविष्य के लिए जल-स्रोतों के संरक्षण और नर्मदा यात्रा को पूरी तरह से सफल बनाने का संकल्प लें।

(ब्लॉगर मप्र के मुख्यमंत्री हैं)